चैत्र-आषाढ़, २०८०
अप्रैल-जून, 2023

विन्देम देवतां वाचम्

ISSN : 0378-391X
भाग-84, अंक: 2
यूजीसी केयर लिस्ट में सम्मिलित

हिन्दुस्तानी

त्रैमासिक

शतान्दी की ओर

आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA
वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

स्वतंत्रता संग्राम पर केन्द्रित
विशेषांक भाग-२

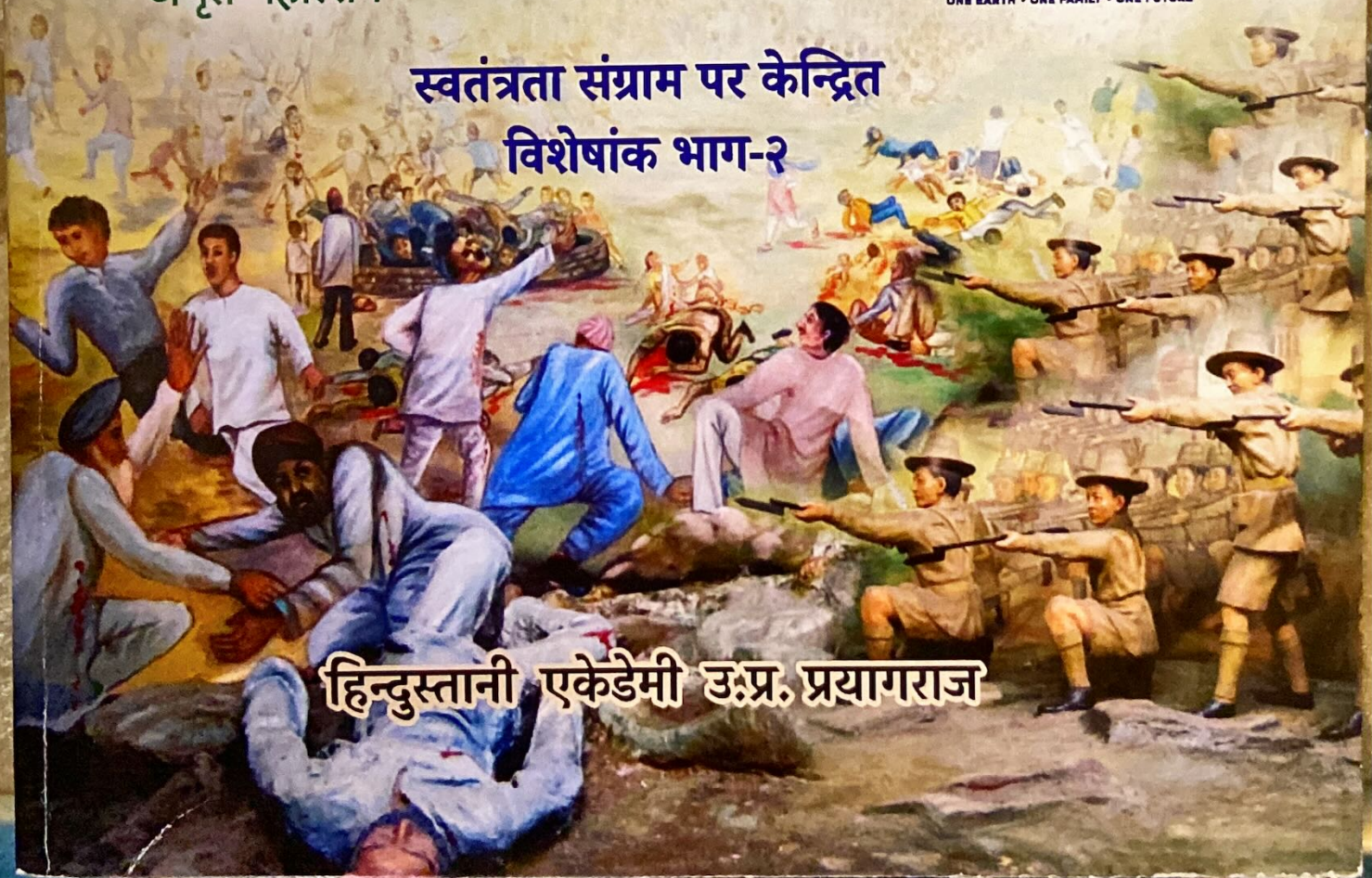

हिन्दुस्तानी एकेडेमी उ.प्र. प्रयागराज

शताब्दी की ओर

हिन्दुस्तानी

त्रैमासिक

स्वतंत्रता संग्राम पर केन्द्रित विशेषांक
(भाग-2)

चैत्र-आषाढ़, विक्रम संवत् २०८०

भाग–84, अंक–2

अप्रैल-जून, 2023

सम्पादक
देवेन्द्र प्रताप सिंह

प्रबन्ध सम्पादक
दुर्गेश कुमार सिंह

सहायक सम्पादक
ज्योतिर्मयी

विन्देम देवतां वाचम्

हिन्दुस्तानी एकेडेमी
प्रयागराज

- भगत सिंह का हिन्दी से प्रेम – चित्रलेखा वर्मा .. 137
- हिंदी प्रदेश की बागी औरतें : लोक से इतिहास तक – संगीता मौर्य .. 144
- सत्तावनी क्रान्ति के अमर नायक राणा वेणी माधव सिंह – सुरेश चन्द्र शर्मा .. 151
- बावन इमली – तेजस्विनी सोनी .. 155
- राष्ट्रीय आंदोलन में संयुक्त प्रान्त की महिलाओं का योगदान (1919-1947) – रमेश कुमार .. 158
- स्वाधीनता आंदोलन : आर्थिक, धार्मिक और भाषाई अलगाववाद – शारदा द्विवेदी .. 164
- भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में 'अरुणा आसफ अली' की महती भूमिका – प्रीतिसिंह .. 168
- स्वाधीनता आंदोलन के गुमनाम शहीद : जयदेव कपूर – शशांक कुमार सिंह .. 172
- स्वतंत्रता आन्दोलन और हिन्दी – आदर्श मिश्र .. 175
- स्वाधीनता आन्दोलन और हिन्दी भाषा का विकास – अजय कुमार यादव .. 179
- अल्पज्ञात स्वतंत्रता सेनानी और लेखक श्री रामशर्मा – कुमारी प्रियंका .. 183
- क्रान्तिज्वाला स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पं. सूर्यदत्त बनकटा – आशीष कुमार पाण्डेय .. 186
- भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का आधार : सांस्कृतिक राष्ट्रवाद – अतुल कुमार मिश्र .. 189
- चन्द्रशेखर आजाद : भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में भूमिका – अनन्त सिंह जौलियाँग .. 194
- बिहारीसतसई की नारियों का स्वातंत्र्य बोध और प्रेमाकांक्षा – आर. पी. गंगवार .. 207
- मोबाईल तकनीक से समृद्धि की ओर हिन्दी भाषा व साहित्य – परमवीर सिंह, मयंक भारद्वाज .. 211
- कविता का आत्मविस्तार – ए. अरविंदाक्षन .. 215
- भारत में स्वतंत्रता के पश्चात् जाति आधारित व्यवसायिक स्थिति पर संक्षिप्त टिप्पणी – सतेन्द्र कुमार सिंह .. 228
- खेल और महिलायें – गोर्की सिन्हा, पुष्पिन्दर सिंह .. 231

■ **ग़ज़ल**

- ग़ज़ल – पीयूष मित्र 'पीयूष' .. 235
- ग़ज़ल – राजेंद्र निशेश .. 236

■ **पुस्तक समीक्षा**

- भावनाओं की अठखेलियाँ – गणेश गंभीर .. 237
- बहस के मुद्दे : मुद्दों पर बहस – श्रीरंग .. 240
- आध्यात्मिक कविता-संग्रह : 'आत्माभिव्यक्ति के स्वर' – कु. अर्चना श्रीवास्तव .. 242
- रचनाकारों के पते .. 244
- रेखांकन – जूही शुक्ला

■■■

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में 'अरुणा आसफ अली' की महती भूमिका

प्रीति सिंह

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन भारत में एक ऐसा आंदोलन है, जिसके महत्व को कभी भी समाप्त नहीं किया जा सकता है। देश की स्वतंत्रता के 75वीं वर्षगांठ अर्थात अमृत महोत्सव को सभी भारतवासियों ने धूमधाम से मनाया। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व संपूर्ण भारत के विविध क्षेत्रों के लोगों ने अपनी-अपनी क्षमता से भी अधिक प्रयास करके कियाहै। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में देश के कई युवाओं ने अपने प्राणों को मातृभूमि के प्रति समर्पित कर दिया। भारत में स्वतंत्रता के अदम्य आकांक्षा का बीजारोपण जनमानस में वर्ष 1957 के स्वतंत्रता संग के साथ हुआ एवं वह फलीभूत 15 अगस्त 1947 को हुआ। निश्चित रूप से यह विषम संग्राम जिस शक्ति संवरण से जीता जाना संभव हो सका उसके मूल में तप, त्याग, शौर्य, सत्य, पराक्रम, सौहार्द, विश्वबंधुत्व आदि उदात्त गुणों से समृद्ध मातृभूमि के प्रति समर्पित भाव 'भारतीयता' ही केंद्र में थी।

> "ज्यों-ज्यों जागृति आने लगती, देश जागरूक होने लगा।
> नितराष्ट्रीयता बढ़ने लगी, नवशक्ति बल फिर आने लगा।
> अपने स्वार्थों की रक्षा में शासन सशंकित होने लगा,
> देशभक्ति, राजभक्ति अंतर, निरंतर भारत पाने लगा।"[1]

भारत में विदेशी साम्राज्य से मुक्त होने हेतु लंबे समय से संघर्ष प्रक्रिया प्रारंभ हुई, जिसे स्वतंत्रता आंदोलन का नाम दिया गया, यह आंदोलन राष्ट्रीय एवं विभिन्न क्षेत्रीय आह्वानों, उत्तेजनाओं और प्रयत्नों से प्रेरित भारतीय राजनीतिक संगठनों द्वारा संचालित आंदोलन था, जिसका लक्ष्य अंग्रेजी शासन से भारत और भारतवासियों को मुक्त कराना था।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन किसी एक नायक द्वारा नहीं चलाया गया अपितु सभी भारतवासियों ने अपने स्तर से स्वतंत्रता आंदोलन में नई ऊर्जा का संचार किया। जिसमें मंगल पांडे, रानी लक्ष्मीबाई, महात्मा गांधी, दादा भाई नौरोजी, गोपाल कृष्ण गोखले, लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, सुखदेव आदि प्रमुख रहे। परंतु इन जननायक के साथ कई ऐसे भी शहीद हैं, जिन्होंने अपने जीवन का सर्वस्य भारत को स्वतंत्र कराने के लिए न्योछावर कर दिया। उन शहीदों के नाम तक पूर्णरूप से भारतीय जनता नहीं जानती है, उन शहीदों को गुमनाम शहीदों के रूप में श्रद्धांजलि देने से बेहतर है, कि उनके विषय में जानाजाए। ऐसे शहीदों में अल्लूरी सीताराम राजू, प्रीतिलता वाद्देदार, हेमुकालानी सख्खर, दिनेश चंद्र मजूमदार, किशन सिंह गडगज्ज, वासुदेव बलवंत फड़के, क्रांतिकारी प्रफुल्ल चाकी, मदन लाल ढींगरा आदि ऐसे अनेक युवा शहीद हुए जो भारत के विभिन्न क्षेत्रों से देश को स्वतंत्रता दिलाने के लिए अनेक प्रकार के संघर्ष कर रहे थे एवं जनमानस को जोड़ने का प्रयास भी। अंततः भारत को स्वतंत्रता दिलाने के लिए इन शहीदों ने अपने प्राणों की आहुति भी दे दी। परन्तु आज भी यह 'गुमनाम शहीद' के नाम से जाने जाते हैं।

स्वतंत्रता के 75 वर्ष बीतने पर भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन में महिलाओं की उपस्थिति दर्ज की जा रही है-पूछे जाने पर अधिकांश लोग, स्वाधीनता आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी को स्मरण करते हैं। जैसे ब्रिटिश प्रशासन के विरुद्ध गांधीजी के आंदोलनों-नमक सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा और असहयोग आंदोलन में हजारों की संख्या